डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'भारत–चीन साहित्य मंच' का आयोजन

नई दिल्ली। 25 सितंबर 2018। साहित्य अकादेमी में आज भारत–चीन साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें शंघाई लेखक समिति की उपाध्यक्ष सुश्री वांग लेन के अतिरिक्त वेनजुन क़िन और झाङ् दिंघाओ ने भाग लिया। कार्यक्रम में चीनी दूतावास के अधिकारी यंग जुन एवं झाङ जियानकिन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों ने उनसे अनेक प्रश्न पूछे जिसका तीनों लेखकों ने समुचित उत्तर दिया।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि चीन के साथ साहित्य अकादेमी का सांस्कृतिक आदान प्रदान पिछले तीस वर्षों से निरंतर चल रहा है। उन्होंने दोनों देशों के प्राचीन संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य ही इन संबंधों को और मजबूती प्रदान कर सकता है। सभी भारतीय लेखकों के परिचय के बाद शंघाई लेखक समिति की उपाध्यक्षा ने शंघाई लेखक समिति द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि इस संगठन से हजार से भी ज्यादा लेखक जुड़े हुए है जो आठ विभिन्न विधाओं के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर का उल्लेख करते हुए कहा कि वे चीन में बहुत लोकप्रिय हैं और उनका गहरा प्रभाव वहाँ देखा जा सकता है। आगे उन्होंने कहा कि समिति युवाओं एवं बच्चों के साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए भी विभिन्न कार्य कर रही है। कार्यक्रम के अंत में भारतीय लेखकों द्वारा विभिन्न जिज्ञासाएँ प्रकट की गईं, जिनमें प्रमुख थीं – चीनी साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव, वहाँ पर पुस्तक पढ़ने की संस्कृति तथा अल्पसंख्यक समुदायों के साहित्य की स्थिति आदि।

कार्यक्रम में जेएनयू के चीनी विभाग से बी.आर. दीपक, हेमंत अदलखा सहित अनेक वरिष्ठ साहित्यकार – सत्यव्रत शास्त्री (संस्कृत), अजगर वजाहत (हिंदी), चंद्रमोहन (अंग्रेजी), मोहन चुटानी (सिंधी), सुरेश ऋतुपर्ण (हिंदी) अमरेंद्र खटुआ, सुजाता शिवेन (ओड़िया) एव बी.एल. गौड़, मोहन हिमथानी, अमन मुदि आदि अन्य लेखक एवं पत्रकार एवं दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

(के. श्रीनिवासराव)